


---

# Shri Ganesha Stuti Agnikrita

——  
अग्नि॒कृ॒ता श्रीगणेशस्तुतिः

——  
Document Information



---

Text title : Shri Ganesha Stuti Agnikrita

File name : gaNeshastutiHagnikRRitA.itx

Category : ganesha, mudgalapurANa, stuti, dvAdasha

Location : doc\_ganesha

Proofread by : Yash Khasbage, Preeti Bhandare

Description/comments : mudgalapurANaM dviItIyaH khaNDaH | adhyAyaH 40 | 2.40. 34-48||

Latest update : June 4, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 4, 2024

*sanskritdocuments.org*

---



---

## Shri Ganesha Stuti Agnikrita

---

### अग्निकृता श्रीगणेशस्तुतिः

---



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अग्निरुवाच ।

नमस्ते विघ्ननाशाय भक्तानां छितकारक ।  
नमस्ते विघ्नकर्त्रे वै ज्यभक्तानां विनायक ॥ ३४ ॥  
नमो मूषकवाढाय गजवकुत्राय धीमते ।  
आदिमध्यान्तलीनायादिमध्यान्तस्वरूपिणे ॥ ३५ ॥  
यतुर्भुजधरायैव यतुर्वर्गप्रदायिने ।  
ऐक्यन्ताय वै तुभ्यं डेरम्भाय नमो नमः ॥ ३६ ॥  
लम्बोदराय देवाय गजकर्णाय दुर्लभ्ये ।  
योगशान्तिस्वरूपाय योगशान्तिप्रदायिने ॥ ३७ ॥  
योगिभ्यो योगदाने य योगिनां पतये नमः ।  
यरायरमयायैव प्राणवाकृतिधारिणे ॥ ३८ ॥  
सिद्धिबुद्धिमयायैव सिद्धिबुद्धिप्रदायक ।  
सिद्धिबुद्धिपते तुभ्यं नमो भक्तप्रियाय य ॥ ३९ ॥  
अनन्तानन देवेश प्रसीद करुणानिधे ।  
दासोऽहं ते गणार्ध्यक्ष मां पालय विशेषतः ॥ ४० ॥  
धन्योऽहं सर्वदेवेषु दृष्ट्वा पादं विनायक ।  
कृतकृत्यो मलयोगी ब्रह्मभूतो न संशयः ॥ ४१ ॥  
यदि प्रसन्नभावेन वरदोऽसि गजानन ।  
तदा मां शापलीनं त्वं कुरु देवेन्द्रसत्तम ॥ ४२ ॥  
तव भक्तिं दृढां देहि यथा मोहो विनश्यति ।  
तव भक्तैः सहावासो ममास्तु गणनायक ॥ ४३ ॥  
यदा सङ्कटसंयुक्तस्तदा स्मरणात्स्तव ।  
निःसङ्कटोऽहमत्यन्तं भवामि त्वत्प्रसादतः ॥ ४४ ॥  
अवेमुक्त्वा गणधीशं प्राणतो भक्तिसंयुतः ।

तमुवाय गण्णधक्षो भक्तवत्सलभावतः ॥ ४५ ॥

(ङुलश्रुतिः)

गणेश उवाय ।

त्वया कृतमिदं स्तोत्रं मम प्रीतिविवर्धनम् ।

भविष्यति नृणां यैव शृण्वतां पठतां सदा ॥ ४६ ॥

यं यं चिन्तयसे कामं तं तं दास्यामि शाश्वतम् ।

भक्तिभावेन सन्तुष्टो भृशं स्तोत्रेण संस्थितः ॥ ४७ ॥

मदीया भक्तिरयला भविष्यति सदाऽनघ ।

सङ्कटं स्मरणेनैव मदीयेन विनश्यति ॥ ४८ ॥

एति अग्निहृता श्रीगणेशस्तुतिः सम्पूर्णा ॥

द्वादशस्तोत्रं

- ॥ मुद्गलपुराणं द्वितीयः भाऽऽः । अध्यायः ४० । २.४०। ३४-४८ ॥

- .. mudgalapurANaM dvitIyaH khaNDaH . adhyAyaH 40 . 2.40. 34-48..

Proofread by Yash Khasbage, Preeti Bhandare

---

—  
*Shri Ganesha Stuti Agnikrita*

pdf was typeset on June 4, 2024

—  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

